ISSN : 2583-2948

कौन हूँ मैं?

प्रवीणा. सी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
कोचिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोचीन - 22

कौन हूँ मैं ?
कोई घर नहीं, पता नहीं, रिश्ता नहीं
कभी एक सोच हूँ
जो शब्दों के अंदर घुसने केलिए तरसती है।
खोखली रास्तों में भटकर मलिन हुई
राहत की शाखाओं को ढूँढनेवाली आवारगी हवा हूँ।
अंधे नज़रों से बार - बार कुचलती रही
"अपवित्रता की घाव" लगा शरीर हूँ।
गलियों में बैठकर चिल्लाती रही
एक देश की गरीब आत्मा हूँ।
नहीं हूँ मैं कुछ भी, किसी के लिए
खड़ी हूँ अपना सब कुछ खोकर....
दोहराती लंबी कतारों में एक नागरिक।
नीली स्याही के साथ गायब होनेवाला
पाँच साल बाद आए हुए प्रजातंत्र की यादों में।
शिकायतों की बोझ से थकी हुई
पगली जवानी की निर्जीवता में
कलंकित सामाज की चेतनाहीन मानविकता में
निरर्थक मताधिकारी की चुप्पी में छिपे हुए।